चौ० चरण सिंह, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

हिसार, हरियाणा

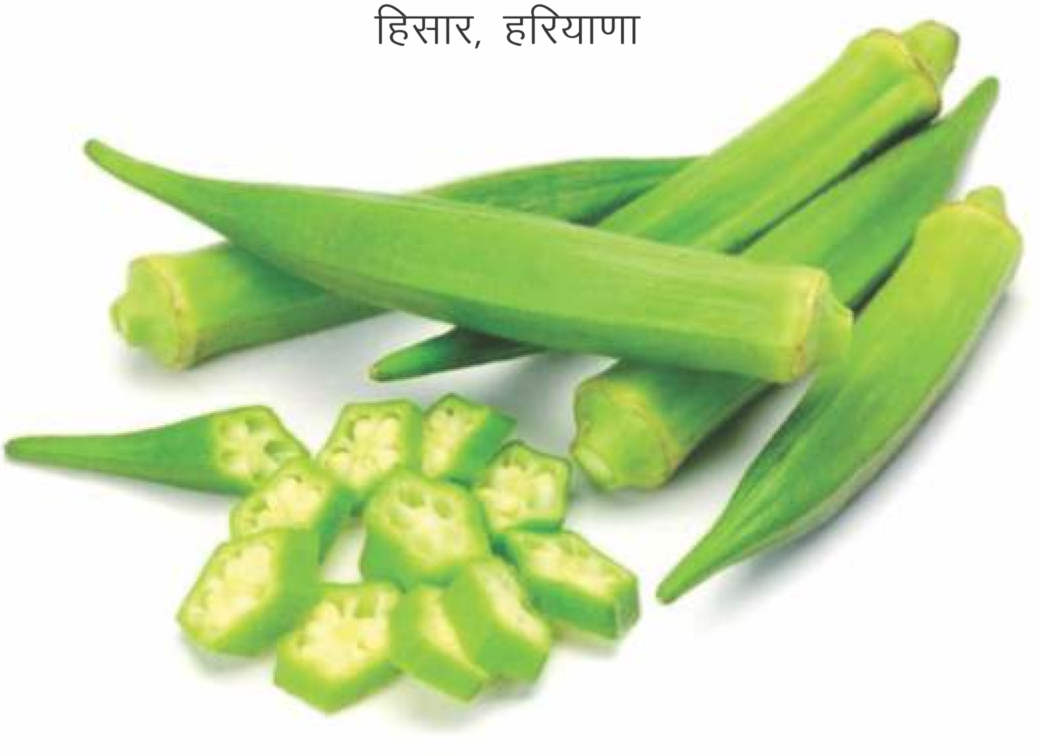

lexz fLQkfj’ksa

fHkUMh

उद्यान विभाग, हरियाणा

उद्यान भवन, सेक्टर–21, पंचकुला–134116

दूरभाष नं : 0172–2582322, वेबसाइट : www.hortharyana.gov.in

y?k| d"kd d`f"k&O;kikj l?k gfj;k.kk ¼lQd½

m|ku Hkou] lDVj&21] ipdyk&134116] gfj;k.kk

दूरभाष : 0172–2581322, ई–मेल : sfacharyana@gmail.com

वेबसाइट : www.hortharyana.gov.in/en/sfach,

www.sfacharyana.org.in

1. हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई किस्में — बरसाती किस्में, वर्षा उपहार, एच बी एच. 142, हिसार नवीन ग्रीष्मकालीन किस्में, हिसार उन्नत, पूसा सावनी

2. **Hkwfe dh rS;kjh**

खेत में हल व पाटा चलाकर मिट्टी को भुरभुरी करले तथा बिजाई से लगभग 3 सप्ताह पहले गोबर की खाद खेत में जुताई करतें समय डालें।

क) मिट्टी के प्रकार	दोमट मिट्टी
ख) जुताई की संख्या	3–4 बार

3· **fctkbZ dk le;**

गर्मी की फसल – फरवरी–मार्च,
बरसात की फसल – जून–जुलाई

4· **cht dh ek=k ¼fd-xzk- izfr ,dM+½**

ग्रीष्मकालीन में – 16 से 18
बरसात में – 5 से 6

5· **fctkbZ dh fof/k**

गर्मी की फसल : 30 से.मी. चौड़ी डोली बनाकर डोली के दोनों तरफ किनारों पर 10 से.मी. की दूरी पर विजाई करें

बरसाती फसल : कतार से कतार की दूरी 45 से 60 से.मी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 30 से.मी. रखें

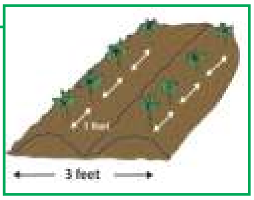

uksV % fctkbZ ls igys cht dks jkrHkj ikuh esa fHkxksdj yxHkx 1 ?kaVk Nk;k esa lq[kkdj fctkbZ djsaA

6. **[kkn o moZjd ¼izfr ,dM+½**

गोबर खाद – 10 टन
नाईट्रोजन – 40 कि.ग्रा.
फास्फोरस – 24 कि.ग्रा.
पोटाश – मिट्टी की जांच के आधार पर

uksV % ukbVªkstu dh 1@3 ek=k rFkk ckdh lHkh [kkn vko';drk gksus ij fctkbZ ls igys rFkk 'ks"k ukbVªkstu dh 2@3 ek=k dks nks ckj cjkcj Hkkxksa esa ckaVdj igyk vk/kk Hkkx fctkbZ ds rhu lIrkg ckn rFkk nwljk Hkkx Qwy esa Qy vkus ij MkysaA

7· **flapkbZ**

गर्मी में – 5–6 दिनों के अन्तराल पर
बरसात में – आवश्यकतानुसार

8. **rqyh; ikuh ds lkFk ftIle dk iz;ksx**

एक मि.ली. तुल्यांक प्रति लीटर आर.एस.सी. को निरस्थीकरण करने के लिए जिप्सम 32 कि.ग्रा. (80 प्रतिशत शुद्धता) प्रति सिंचाई प्रति एंकड़ तथा 8 टन गोबर की सड़ी हुई खाद प्रति एकड़ डालें।

9.	[kjirokj fu;a=.k		
	बिजाई से एक दिन पहले लुक्लोरालिन दवा 400 ग्राम (बासालिन 45 प्रतिशत 900 मि.ली.) का 250 लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकाव करें।		
10.	Qyksa dh rqMkbZ		
	फलों को नरम अवस्था में तोड़ें। वर्षा ऋतु में 45 से 55 दिन बाद तुड़ाई शुरू हो जाती है। वर्षा उपहार किस्म की तुड़ाई एक दिन छोड़कर करनी चाहिए।		
11.	gkfudkjd dhMs o y{k.k		
	कीड़े	लक्षण	रोकथाम व सावधानियां
d-	gjk rsyk	हरे पीले रंग के शिशु व प्रौढ़ पत्तों की निचली सतह से मई से सितम्बर तक रस चूसते हैं तथा पत्ते पीले पड़ जाते हैं और किनारों से ऊपर की ओर मुड़कर कप का आकार बना लेते हैं । अधिक प्रकोप होने पर पत्ते जल जाते हैं तथा सूखकर झड़ जाते हैं।	बीज का उपचार इमीडाक्लोपरिड 70 डब्ल्यू. एस. 5 ग्राम या क्रुजर 35 एफ.एस. (थायामिथोक्षम) 5.7 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से करें। बीज को 6 से 12 घंटे तक पानी में भिगोयें और आधे से एक घंटे तक छाया में सुखायें ओर ऊपर लिखित दवाई डालकर अच्छी तरह मिला दें। अगर बीज का उपचार न किया गया हो तो भिण्डी की खड़ी फसल में हरा तेले के उपचार के लिए एक्टारा 25 डब्ल्यू.जी. (थायामिथोक्षम) नामक दानेदार कीटनाशक 40 ग्राम दवा को 150–200 लीटर पानी में घोलकर एक एकड़ में छिड़काव करें। इस कीटनाशक को 20 दिन के अंतराल पर आवश्यकता हो तो फिर दोहराएं । खाने के लिए उगाई गई फसल में यह छिड़काव न करें तथा 300–500 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. 200–300 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
[k-	lQsn eD[kh	इस कीट के शिशु तथा प्रौढ़ पत्तों की निचली सत्तह से रस चूसते हैं तथा पीत शिरा मोजैक (पीलिया) रोग फैलाते हैं।	जैसा की हरा तेला में बताया गया है।
x-	v"Vinh	इस माईट के शिशु एवं प्रौढ़ पत्तों की निचली सत्तह से रस चूसते है जिससे पतों पर छोटे–छोटे सफेद धब्बे बन जाते हैं। यह माईट पत्तों पर जाला बना देती है। अधिक प्रकोप होने पर लाल माईट फलों व पत्तों की नोक पर इकट्ठी हो जाती है।	लाल माईट (अष्टपदी) की रोकथाम के लिए प्रेम्पट 20 ई.सी. नामक दवा का 300 मि.ली. प्रति एकड़ के दो छिड़काव 10 दिन के अंतर पर करें। आवश्यकता पड़ने पर इसे फिर दोहराएं।
?k-	fpÙkhnkj ruk o Qycs/kd lq.Mh	यह सूण्डी बेलनाकार जिसके शरीर पर हल्के – पीले संतरी, भूरे व काले धब्बे होते हैं। छोटी फसल में सूण्डियां कोंपलों में छेद	फल शुरू होने पर 400–500 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. या 400–500 ग्राम कार्बेरिल 50 घुलनशील पाउडर या 75–80 मि.ली. स्पाईनोसैड 45 एस.सी. को 200 लीटर पानी में

		करके अन्दर पनपती रहती हैं जिससे कोंपलें मुरझाकर नीचे लटककर सूख जाती हैं। बाद में सूण्डियां कलियों, फूलों तथा फलों को नुकसान करती हैं। ग्रसित फल टेढ़े व काने हो जाते हैं। इसका प्रकोप जून से अक्तूबर तक अधिक मिलता है।	घोलकर प्रति एकड़ छिड़काव करें। इसे 15 दिन के अंतर पर तीन बार दोहराएं। बीज के लिए लगाई गई भिण्डी में इस कीट के उपचार के लिए 55–60 ग्रम प्रोक्लेम 5 जी. (एमामैक्टिन) नामक दानेदार दवा को 200 लीटर पानी में घोलकर 15 दिन के अंतराल पर 3 से 4 बार दोहराएं।
12.	fcekfj;k o jkdFkke		
	fcekfj;k	y{k.k	jkdFkke ,o lko/kkfu;k
क.	ihr fljk ekt d ;k ihyk jkx	पत्तों की शिरायें पीली हो जाती हैं व बाद में सारे पत्ते पीले पड़ जाते हैं जिससे फल पीले व कम लगते हैं।	वर्षा उपहार या हिसार उन्नत या पी–7 किस्म बोयें क्योंकि इनमें रोग कम लगता है। कीटनाशको के नियमित छिड़काव द्वारा रोग फैलाने वाले कीड़े नष्ट करें और रोगी पौधों को शुरू से ही निकालते रहें। 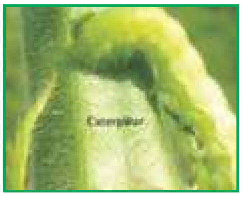
ख.	tM xyu	छोटे पौधों का बढ़ना रूक जाता है और पौधे भी पीले होकर मर जाते हैं तथा जड़ें गल जाती हैं।	बीजने से पहले बीजों को 2 ग्राम बाविस्टिन या 2.5 ग्राम कैप्टान को प्रति किलोग्राम बीज में मिलाकर करें। रोगी पौधे निकाल दें। 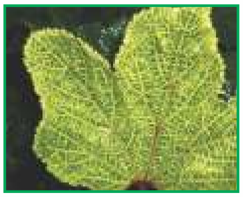
ग.	tM xkB jkx	प्रभावित पौधे पीले तथा बौने दिखते हैं तथा जड़ों में गांठे बन जाती है।	बचाव के लिए लगातार उन्हीं खेतों में भिण्डी, टमाटर, मिर्च व कद्दू वर्गीय सब्जियों की काश्त न करें। गर्मियों में 2–3 गहरी जुताई करें व खेत खुला छोड़ दें। सूत्रकृमि के नियन्त्रण के लिए ट्राईकोडर्मा विरिडी 2.5 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से फसल की बिजाई के समय मिलायें। 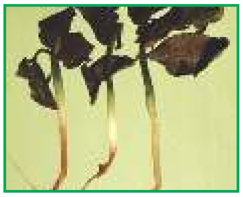

ukV % ;g lexz flQkfj'k gfj;k.kk d`f"k fo'ofo|ky;] fglkj dh lexz flQkfj'k ij vk/kkfjr gSA